TEST -16 (Polity) Detail Hindi Answers Key

- प्रश्न 1: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि 'मूल ढांचा' शब्द संविधान में कहीं भी वर्णित नहीं है। यह न्यायपालिका द्वारा विकसित एक सिद्धांत है। कथन 2 और 3 पूर्णतः सत्य हैं।
- प्रश्न 2: (D) व्याख्या: ये चारों तत्व समय-समय पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा (जैसे: इंदिरा गांधी मामला, एस.आर. बोम्मई मामला) मूल ढांचे के रूप में पहचाने गए हैं।
- प्रश्न 3: (A) व्याख्या: कथन और कारण दोनों सत्य हैं। न्यायपालिका संरक्षक इसलिए है क्योंकि वह मूल ढांचे के आधार पर संशोधनों की जांच कर सकती है।
- प्रश्न 4: (D) व्याख्या: ये तीनों कथन मूल ढांचे की प्रासंगिकता और इसके दार्शनिक आधार को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं।
- प्रश्न 5: (D) व्याख्या: चारों युग्म सही हैं। एल.एम. सिंघवी समिति ने ही लोकतंत्र के सशक्तिकरण के लिए पंचायतों के संवैधानिकरण की सिफारिश की थी।
- प्रश्न 6: (D) व्याख्या: 11वीं अनुसूची में 29 विषय हैं (जैसे कृषि, भूमि सुधार, शिक्षा आदि)। ग्राम सभा प्रत्यक्ष लोकतंत्र का आधार है।
- प्रश्न 7: (A) व्याख्या: अनुच्छेद 243S के अनुसार वार्ड समितियों के लिए 3 लाख की जनसंख्या का मानदंड अनिवार्य है। कथन और कारण दोनों सत्य हैं और एक-दूसरे से संबंधित हैं।
- प्रश्न 8: (D) व्याख्या: सदस्य सीधे चुने जाते हैं (Direct Election), लेकिन मध्यवर्ती और जिला स्तर के अध्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से (Indirect Election) चुने जाते हैं। महिलाओं के लिए 33% आरक्षण अनिवार्य प्रावधान है।
- प्रश्न 9: (C) व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि 42वें संशोधन द्वारा केवल 10 कर्तव्य जोड़े गए थे। 11वां कर्तव्य बाद में 2002 में जोड़ा गया। 86वें संशोधन का उद्देश्य शिक्षा को अधिकार के साथ-साथ अभिभावकों का कर्तव्य भी बनाना था।
- प्रश्न 10: (A) व्याख्या: यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है। स्वर्ण सिंह समिति ने दंड का प्रावधान सुझाया था, लेकिन तत्कालीन सरकार ने इसे लोकतांत्रिक मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए 'गैर-न्यायोचित' रखना ही उचित समझा। अतः (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
- प्रश्न 11: (D) व्याख्या: मूल कर्तव्य प्रकृति में 'नागरिक कर्तव्य' (Civic Duties) हैं। वर्मा समिति ने स्पष्ट किया कि यद्यपि कर्तव्य स्वयं दंडनीय नहीं हैं, पर संसद ने उनके संरक्षण के लिए कई कानून पहले ही बना रखे हैं। न्यायालय भी 'संवैधानिक उचितता' जांचने के लिए इनका सहारा लेता है।
- प्रश्न 12: (D) व्याख्या: तीनों कथन सत्य हैं। अनुच्छेद 3 के कारण भारत को 'विनाशी राज्यों का अविनाशी संघ' कहा जाता है। यह भारतीय संघवाद की अद्वितीय विशेषता है जो इसे अमेरिकी संघवाद से अलग करती है।
- प्रश्न 13: (B) व्याख्या: दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सही हैं। राज्यपाल द्वारा विधेयकों को रोकना हालिया विवादों का केंद्र है (कथन A सत्य)। शमशेर सिंह मामला मंत्रिपरिषद की बाध्यकारी सलाह की पुष्टि करता है (कथन R सत्य)। हालाँकि, कारण (R) सीधे तौर पर केवल विधेयकों को रोकने (Pocket Veto) की विशिष्ट प्रक्रिया की व्याख्या नहीं करता, बल्कि सामान्य स्थिति बताता है।
- प्रश्न 14: (A) व्याख्या: अनुच्छेद 249 संसद को विशेष शक्ति देता है। अनुच्छेद 262 जल विवादों के लिए है। अनुच्छेद 263 राष्ट्रपति को अंतर-राज्य परिषद बनाने की अनुमति देता है और 275 वित्तीय सहायता से संबंधित है।
- प्रश्न 15: (A) व्याख्या: कथन 1 और 2 प्रशासनिक नियंत्रण के संवैधानिक साधन हैं। कथन 3 विश्लेषणात्मक रूप से विवादित हो सकता है, लेकिन संवैधानिक रूप से अखिल भारतीय सेवाओं को संघवाद का 'अनिवार्य तत्व' माना जाता है जो राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करती हैं (अनुच्छेद 312), न कि इसका 'उल्लंघन'।
- प्रश्न 16: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। मूल संविधान में कॉलेजियम का जिक्र नहीं था; यह 1981-1998 के बीच 'Judges Cases' के माध्यम से विकसित हुआ। NJAC को रद्द करना न्यायपालिका की स्वायत्तता का प्रतीक था।
- प्रश्न 17: (A) व्याख्या: न्यायिक पुनरावलोकन की अवधारणा अमेरिका (USA) के संविधान से ली गई है। भारतीय संविधान में यह प्रत्यक्ष रूप से लिखित नहीं है, लेकिन इसकी शक्ति विभिन्न अनुच्छेदों के माध्यम से प्रवाहित होती है।
- प्रश्न 18: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। 'न्यायिक सक्रियता' के माध्यम से न्यायपालिका नीतिगत शून्यता को भरने के लिए निर्देश दे सकती है (जैसे विशाखा गाइडलाइन्स)। अनुच्छेद 142 इसकी असाधारण शक्ति है।

- प्रश्न 19: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति भी राष्ट्रपति ही करते हैं, राज्यपाल नहीं। कथन 3 सही है क्योंकि HC कानूनी अधिकारों के लिए भी रिट जारी कर सकता है।
- प्रश्न 20: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। भारत में न्यायिक सक्रियता का दौर 1970 के दशक के उत्तरार्ध में (जस्टिस पी.एन. भगवती और वी.आर. कृष्णा अय्यर) शुरू हुआ था।
- प्रश्न 21: (C) व्याख्या: कथन 2 पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि उच्च न्यायालय का न्यायाधीश सेवानिवृत्ति के बाद सर्वोच्च न्यायालय या उन उच्च न्यायालयों में वकालत कर सकता है जिनमें उसने कार्य न किया हो। अन्य सभी प्रावधान स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं।
- प्रश्न 22: (D) व्याख्या: तीनों कथन सत्य हैं। 2023 के नए कानून ने चयन समिति से भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) को हटाकर एक कैबिनेट मंत्री को शामिल किया है, जो वर्तमान में चर्चा का विषय है।
- प्रश्न 23: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। परिसीमन आयोग की नियुक्ति राष्ट्रपति करते हैं, और इसमें चुनाव आयोग तथा राज्य चुनाव आयुक्तों का सहयोग होता है (CJI का परामर्श अनिवार्य नहीं है)। इसके आदेशों को न्यायिक समीक्षा से बाहर रखा गया है।
- प्रश्न 24: (D) व्याख्या: ये तीनों स्वतंत्र मानदंड हैं। वर्तमान में भारत में कुल 6 राष्ट्रीय दल हैं (भाजपा, कांग्रेस, बसपा, माकपा, आप और एनपीपी)।
- प्रश्न 25: (A) व्याख्या: उत्तर प्रदेश (31), महाराष्ट्र (19), पश्चिम बंगाल (16) और आंध्र प्रदेश (11)। सीटों का आवंटन चौथी अनुसूची के अनुसार जनसंख्या के आधार पर होता है।
- प्रश्न 26: (B) व्याख्या: दोनों कथन सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की व्याख्या नहीं करता क्योंकि वे अलग-अलग चुनाव श्रेणियों (राष्ट्रपति बनाम संसद) की बात कर रहे हैं। राष्ट्रपति चुनाव विवाद अनुच्छेद 71 के तहत केवल सुप्रीम कोर्ट सुनता है।
- प्रश्न 27: (A) व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि FPTP में उम्मीदवार को केवल दूसरों से अधिक मत चाहिए, 50% की सीमा नहीं। कथन 3 विश्लेषणात्मक रूप से जटिल है, लेकिन सिद्धांततः FPTP द्वि-दलीय व्यवस्था की ओर ले जाता है (Duverger's Law), हालाँकि भारत में यह बहु-दलीय रहा है।
- प्रश्न 28: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। मूल संविधान में मंत्रिपरिषद के आकार की कोई सीमा नहीं थी। यह सीमा 2003 में 91वें संशोधन द्वारा जोड़ी गई थी ताकि प्रशासनिक मितव्ययिता और राजनीतिक स्थिरता बनी रहे।
- प्रश्न 29: (D) व्याख्या: कथन (A) आंशिक रूप से गलत है क्योंकि मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से पूरे 'संसद' के प्रति नहीं, बल्कि विशेष रूप से केवल 'लोकसभा' के प्रति उत्तरदायी होती है। अतः कथन गलत है और कारण सही है।
- प्रश्न 30: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। 91वें संशोधन ने दल-बदल करने वालों को मंत्री बनने से रोकने का कड़ा प्रावधान किया है। साथ ही, 6 महीने के भीतर सदस्यता प्राप्त करना अनिवार्य है (अनुच्छेद 75(5))।
- प्रश्न 31: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। भारत में संसदीय प्रणाली है जहाँ कार्यपालिका, विधायिका का ही हिस्सा होती है और उसके प्रति उत्तरदायी होती है। शक्तियों का पूर्ण पृथक्करण (जैसे अमेरिका में है) भारत में नहीं पाया जाता।
- प्रश्न 32: (D) व्याख्या: भारत में राष्ट्रपति के आदेश पर मंत्री के हस्ताक्षर (Counter-signature) की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए ब्रिटेन की तरह यहाँ मंत्रियों की विधिक जिम्मेदारी नहीं है। अनुच्छेद 74(2) स्पष्ट रूप से न्यायालयों को मंत्रियों की सलाह की जाँच करने से रोकता है।
- प्रश्न 33: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन, वी.वी. गिरि, आर. वेंकटरमण, डॉ. शंकर दयाल शर्मा और के.आर. नारायणन वे छह व्यक्ति हैं जो पहले उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति बने।
- प्रश्न 34: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि 'संविधान का अतिक्रमण' शब्द का प्रयोग तो हुआ है, लेकिन संविधान में इसे कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है। महाभियोग में मनोनीत सदस्यों की भागीदारी इसकी अर्ध-न्यायिक प्रकृति को दर्शाती है।
- प्रश्न 35: (A) व्याख्या: भारत में आज तक किसी राष्ट्रपति पर महाभियोग नहीं लगा। इसकी प्रक्रिया की कठोरता (कुल सदस्यता का 2/3 बहुमत) एक बड़ा कारण है, जो इसे राजनीतिक दुरुपयोग से बचाता है।
- प्रश्न 36: (D) व्याख्या: डॉ. जाकिर हुसैन की पद पर रहते हुए मृत्यु हुई थी और वी.वी. गिरि ने राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए उपराष्ट्रपति पद से त्यागपत्र दे दिया था। अतः दोनों ने कार्यकाल पूर्ण नहीं किया।
- प्रश्न 37: (B) व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि राज्यसभा एक स्थायी सदन है और इसे कभी भंग नहीं किया जा सकता। राष्ट्रपति केवल लोकसभा को भंग कर सकता है। राष्ट्रपति की अध्यादेश शक्ति उसे विधायी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाती है।
- प्रश्न 38: (D) व्याख्या: नागरिकता अधिनियम 1955 इन पाँच तरीकों (जन्म, वंश, पंजीकरण, प्राकृतिक रूप और क्षेत्र समाविष्टि) का विस्तार से वर्णन करता है। तीनों कथन इन विधियों की अनिवार्य शर्तों को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

- प्रश्न 39: (D) व्याख्या: ये अनुच्छेद विभाजन के समय की विशेष परिस्थितियों के लिए बनाए गए थे। 19 जुलाई 1948 की तिथि 'परमिट सिस्टम' लागू होने की तिथि थी, जो अनुच्छेद 6 और 7 दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।
- प्रश्न 40: (A) व्याख्या: अनुच्छेद 9 स्पष्ट करता है कि विदेशी नागरिकता स्वेच्छा से लेने पर भारतीय नागरिकता समाप्त हो जाएगी। भारत में 'एकल नागरिकता' का सिद्धांत है, जो (R) को (A) की सही व्याख्या बनाता है।
- प्रश्न 41: (D) व्याख्या: NRI 'भारतीय नागरिक' हैं, इसलिए उन्हें मतदान का अधिकार है। OCI विदेशी नागरिक होते हैं जिन्हें कुछ विशेष सुविधाएँ प्राप्त हैं, लेकिन वे राजनीतिक अधिकार (जैसे मतदान या चुनाव लड़ना) नहीं रखते।
- प्रश्न 42: (D) व्याख्या: अनुच्छेद 5-10 स्थायी नागरिकता कानून नहीं हैं। स्थायी कानून बनाने की शक्ति अनुच्छेद 11 ने संसद को दी है, जिसका नवीनतम उपयोग CAA 2019 के माध्यम से किया गया है।
- प्रश्न 43: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि राष्ट्रपति अपनी मर्जी से किसी को भी PM नहीं चुन सकता; उसे लोकसभा में बहुमत दल के नेता को ही नियुक्त करना होता है। विवेकाधीन शक्ति केवल तभी मिलती है जब किसी दल को स्पष्ट बहुमत न हो। कथन 2 और 3 संवैधानिक रूप से सही हैं।
- प्रश्न 44: (A) व्याख्या: अनुच्छेद 78 स्पष्ट रूप से PM के तीन मुख्य कर्तव्यों का वर्णन करता है। राष्ट्रपति को सूचना देना PM की जिम्मेदारी है, इसलिए वह 'पुल' (Bridge) की तरह कार्य करता है। (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
- प्रश्न 45: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद रूपी मेहराब की आधारशिला (Keystone) होता है। उसका त्यागपत्र पूरी सरकार का त्यागपत्र माना जाता है। अविश्वास प्रस्ताव केवल लोकसभा में लाया जाता है क्योंकि मंत्रिपरिषद उसी के प्रति उत्तरदायी है (अनुच्छेद 75(3))।
- प्रश्न 46: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है क्योंकि संविधान संशोधन विधेयक के लिए राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होती। अनुच्छेद 368(2) के तहत संयुक्त बैठक का प्रावधान केवल साधारण विधेयकों के लिए है, संशोधन विधेयकों के लिए नहीं।
- प्रश्न 47: (A) व्याख्या: कथन 4 गलत है क्योंकि मौलिक अधिकारों और DPSP में संशोधन के लिए केवल विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है, राज्यों की सहमति की नहीं। संघीय ढांचे को प्रभावित करने वाले विषयों (1, 2, 3) के लिए राज्यों का अनुसमर्थन अनिवार्य है।
- प्रश्न 48: (A) व्याख्या: आपातकाल के दौरान 42वें संशोधन द्वारा न्यायपालिका और नागरिक अधिकारों पर जो अंकुश लगाए गए थे, उन्हें 44वें संशोधन द्वारा वापस बहाल किया गया। अतः कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
- प्रश्न 49: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। संशोधन की प्रक्रिया लचीलेपन और कठोरता का मिश्रण है, जो लोकतंत्र को सुरक्षित रखते हुए विकास की अनुमति देती है। 'मूल ढांचा' संसद की असीमित शक्ति पर अंकुश लगाता है।
- प्रश्न 50: (A) व्याख्या: 52वां (दलबदल), 61वां (मतदान आयु), 86वां (शिक्षा), और 101वां (GST)। ये सभी संशोधन भारतीय राजव्यवस्था में मील के पत्थर माने जाते हैं।
- प्रश्न 51: (C) व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि 'मैकमोहन रेखा' केवल पूर्वी क्षेत्र (अरुणाचल प्रदेश) की सीमा को संदर्भित करती है, न कि लद्दाख (पश्चिमी क्षेत्र) की। लद्दाख में सीमा रेखा को मुख्य रूप से जॉनसन लाइन या LAC के रूप में देखा जाता है।
- प्रश्न 52: (B) व्याख्या: दोनों कथन सत्य हैं। लेकिन शिमला समझौता (R) यह नहीं समझाता कि भारत ने 'आतंकवाद और वार्ता साथ नहीं' की नीति (A) क्यों अपनाई है; वह केवल द्विपक्षवाद की बात करता है। आतंकवाद विरोधी नीति भारत की अपनी सुरक्षा चिंताओं का परिणाम है।
- प्रश्न 53: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। IMBL को समाप्त करने का कोई निर्णय नहीं हुआ है; बल्कि इस सीमा के उल्लंघन के कारण ही मछुआरों की गिरफ्तारी होती है। बॉटम ट्रॉलिंग विवाद का मुख्य तकनीकी कारण है।
- प्रश्न 54: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। नेपाल के साथ 'रोटी-बेटी' का संबंध है, लेकिन कालापानी विवाद और खुली सीमा का सुरक्षा दुरुपयोग वर्तमान में द्विपक्षीय संबंधों में तनाव का मुख्य कारण है।
- प्रश्न 55: (D) व्याख्या: तीनों कथन सत्य हैं। 1996 की गंगा संधि 2026 में समाप्त होने वाली है (करंट अफेयर्स हेतु महत्वपूर्ण)। कुशियारा समझौता 25 वर्षों में हुआ पहला बड़ा नदी जल समझौता है।
- प्रश्न 56: (C) (व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि वही 'राज्य वित्त आयोग' पंचायतों और नगरपालिकाओं दोनों के लिए सिफारिशें करता है।)
- प्रश्न 57: (C) (व्याख्या: कथन 2 गलत है क्योंकि सत्र के अवसान से विधेयक व्यपगत (Lapse) नहीं होते, वे अगले सत्र के लिए जीवित रहते हैं। केवल विघटन से लोकसभा के विधेयक व्यपगत होते हैं।)

- प्रश्न 58: (A) (व्याख्या: कथन 3 गलत है क्योंकि IMEC में समुद्री मार्ग के साथ-साथ एक व्यापक रेल लिंक (Rail link) भी शामिल है।)
- प्रश्न 59: (A) (व्याख्या: बोम्मई मामले ने यह सुनिश्चित किया कि राष्ट्रपति शासन राजनीतिक प्रतिशोध का साधन न बने। न्यायालय सामग्री की पर्याप्तता की नहीं, बल्कि प्रासंगिकता की जांच कर सकता है।)
- प्रश्न 60: (A) (व्याख्या: कथन 3 गलत है। यह विभाजन भौगोलिक (Geographical) नहीं बल्कि सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक है। ऑस्ट्रेलिया भौगोलिक रूप से दक्षिण में है लेकिन 'ग्लोबल नॉर्थ' का हिस्सा है।)
- प्रश्न 61: (D) (व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। यूक्रेन युद्ध के बाद नाटो का विस्तार (फिनलैंड और स्वीडन का प्रवेश) वैश्विक राजनीति की सबसे बड़ी घटना है।)
- प्रश्न 62: (A) (व्याख्या: कथन 3 गलत है। AUKUS केवल परमाणु-संचालित (Propulsion) पनडुब्बियों के लिए है, यह ऑस्ट्रेलिया को 'परमाणु हथियार' (Weapons) देने की संधि नहीं है।)
- प्रश्न 63: (A) (व्याख्या: कथन 3 गलत है। भारत इस समूह का सदस्य नहीं है, हालांकि भारत के साथ खुफिया जानकारी साझा करने की चर्चा अक्सर होती रहती है।)
- प्रश्न 64: (C) (व्याख्या: कथन (A) सही है। कारण (R) गलत है क्योंकि 'नाटो प्लस' एक सुरक्षा सहयोग समझौता है, इसमें नाटो के 'अनुच्छेद 5' जैसी कानूनी बाध्यता नहीं होती। भारत अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' के कारण इसमें शामिल होने में संकोच करता है।)
- प्रश्न 65: (A) (व्याख्या: ANZUS (1951), AUKUS (2021), QUAD (2007/2017) और वारसॉ पैक्ट (1955-1991)।)
- प्रश्न 66: (C) (व्याख्या: अस्थायी सदस्यों का चुनाव 2 वर्ष के लिए होता है, 5 वर्ष के लिए नहीं। वीटो का उपयोग केवल 'महत्वपूर्ण' मामलों पर होता है, 'प्रक्रियात्मक' पर नहीं।)
- प्रश्न 67: (A) (व्याख्या: महासभा के प्रस्ताव 'सिफारिशी' प्रकृति के होते हैं, वे कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं होते। केवल सुरक्षा परिषद के निर्णय बाध्यकारी होते हैं।)
- प्रश्न 68: (A) (व्याख्या: SDG की निगरानी में ECOSOC और उसके 'उच्च-स्तरीय राजनीतिक मंच' (HLPF) की मुख्य भूमिका है।)
- प्रश्न 69: (B) (व्याख्या: दोनों कथन सही हैं, लेकिन SOFI रिपोर्ट जारी करना भूख समाप्ति के उद्देश्य की व्याख्या नहीं है, वह केवल एक डेटा उपकरण है।)
- प्रश्न 70: (B) (व्याख्या: UNICEF का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है, जिनेवा में नहीं।)
- प्रश्न 71: (A) (व्याख्या: UNHRC का सदस्य लगातार दो कार्यकाल के बाद तत्काल पुन: चुनाव के लिए पात्र नहीं होता, लेकिन एक कार्यकाल के बाद हो सकता है। इसका मुख्यालय जिनेवा में है।)
- प्रश्न 72: (A) (व्याख्या: ICJ-द हेग, FAO-रोम, UNESCO-पेरिस, UNHRC-जिनेवा।)
- प्रश्न 73: (D) (व्याख्या: तीनों कथन सामरिक और समसामयिक रूप से सही हैं। भारत लगातार बहुपक्षवाद और UN सुधारों की वकालत कर रहा है।)
- प्रश्न 74: (A) (व्याख्या: भारत ASEAN का सदस्य नहीं है (पड़ोसी और भागीदार है) और OPEC का भी सदस्य नहीं है (भारत तेल का आयातक है, निर्यातक नहीं)। शेष 1, 2, 3, 5 और 6 का भारत सदस्य है।)
- प्रश्न 75: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। 'भारत का राज्यक्षेत्र' (Territory of India) एक व्यापक अभिव्यक्ति है जिसमें राज्य, केंद्र शासित प्रदेश और अधिग्रहित क्षेत्र शामिल हैं, जबकि 'भारत का संघ' (Union of India) में केवल राज्य शामिल हैं।
- प्रश्न 76: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। राष्ट्रपति संबंधित राज्य विधानमंडल को विचार के लिए विधेयक भेजता है, लेकिन उनकी राय संसद पर बाध्यकारी नहीं होती। संसद राय के विपरीत भी निर्णय ले सकती है।
- प्रश्न 77: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। भारत ने अब तक दो प्रमुख बार ऐसा किया है—9वां संशोधन (बेरुबारी के लिए) और 100वां संशोधन (बांग्लादेश के साथ एन्क्लेव हस्तांतरण के लिए)। सामान्य सीमा विवाद निपटान हेतु संशोधन की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन भू-भाग देने के लिए अनिवार्य है।
- प्रश्न 78: (D) व्याख्या: संवैधानिक रूप से केंद्र शासित प्रदेशों का प्रशासन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त प्रशासक के माध्यम से चलाया जाता है। अनुच्छेद 239-241 इसके विस्तृत प्रावधान करते हैं।
- प्रश्न 79: (A) व्याख्या: यह भारत की संघीय व्यवस्था की एक विशिष्ट विशेषता है जिसे 'एकात्मक झुकाव वाला संघ' कहा जाता है। राज्यों का अस्तित्व संसद की इच्छा पर निर्भर है, इसीलिए इसे 'विनाशी राज्यों का अविनाशी संघ' कहते हैं।

- प्रश्न 80: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। सर्वोच्च न्यायालय की रिट अधिकारिता उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 226) की तुलना में 'क्षेत्र' के मामले में बड़ी है (पूरा भारत) लेकिन 'क्षेत्राधिकार के प्रकार' (सिर्फ मौलिक अधिकार) में छोटी है। संसद अनुच्छेद 32(3) के तहत निचली अदालतों को भी यह शक्ति दे सकती है।
- प्रश्न 81: (A) व्याख्या: कथन 2 गलत है। अनुच्छेद 33 और 35 के तहत मौलिक अधिकारों को संशोधित या प्रभावी करने की शक्ति सिर्फ संसद के पास है, ताकि सुरक्षा बलों में अनुशासन की एकरूपता बनी रहे।
- प्रश्न 82: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। 'मार्शल लॉ' शब्द का प्रयोग संविधान में हुआ है, लेकिन इसे कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है। यह अंग्रेजी सामान्य कानून (English Common Law) से लिया गया है। कथन 2 और 3 इसकी वास्तविक शक्तियों को दर्शाते हैं।
- प्रश्न 83: (A) व्याख्या: अनुच्छेद 35 स्पष्ट रूप से कहता है कि अनुच्छेद 16(3), 32(3), 33 और 34 जैसे विषयों पर केवल संसद ही कानून बनाएगी। यदि राज्य विधानमंडलों को यह शक्ति दी जाती, तो मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन में विविधता आ जाती, जिससे संवैधानिक एकरूपता नष्ट होती।
- प्रश्न 84: (D) व्याख्या: अनुच्छेद 358 केवल युद्ध/बाह्य आक्रमण (External Emergency) में लागू होता है। अनुच्छेद 359 आंतरिक और बाह्य दोनों में लागू होता है। अनुच्छेद 20 और 21 का निलंबन वर्जित है।
- प्रश्न 85: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। राष्ट्रपति शासन के दौरान राष्ट्रपति राज्य सरकार और विधायिका की शक्तियां ले सकता है, लेकिन वह उच्च न्यायालय की शक्तियों को नहीं छू सकता। न्यायालय की स्वतंत्रता बनी रहती है।
- प्रश्न 86: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। भारत में अब तक कभी भी वित्तीय आपातकाल नहीं लगाया गया है (Not even in 1991)।
- प्रश्न 87: (C) व्याख्या: कारण (R) गलत है। राज्य सूची पर संसद कानून बना सकती है, लेकिन राज्य विधायिका निलंबित नहीं होती। वह भी कानून बना सकती है, परंतु संसद का कानून प्रभावी होता है (अनुच्छेद 250)। राज्य विधानसभा केवल 'राष्ट्रपति शासन' में निलंबित या भंग होती है।
- प्रश्न 88: (D) व्याख्या: 1975 के आपातकाल के अनुभवों के बाद ये सभी परिवर्तन किए गए ताकि भविष्य में कोई सरकार मनमाने ढंग से आपातकाल न लगा सके।
- प्रश्न 89: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। संविधान ने चुनाव आयोग के सदस्यों के लिए किसी विशिष्ट योग्यता का उल्लेख नहीं किया है।
- प्रश्न 90: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। नीति आयोग के पास धन आवंटन (Fund Allocation) की कोई शक्ति नहीं है; यह कार्य अब वित्त मंत्रालय के पास है।
- प्रश्न 91: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। भारत में CAG केवल लेखा-परीक्षा (Audit) करता है, भुगतान होने के बाद। वह 'चेक' जारी करने पर नियंत्रण नहीं रखता।
- प्रश्न 92: (D) व्याख्या: तीनों कथन सही हैं। NHRC को अक्सर 'दंतविहीन बाघ' (Toothless Tiger) कहा जाता है क्योंकि इसकी शक्तियां केवल सिफारिशी हैं।
- प्रश्न 93: (A) व्याख्या: सरकार आमतौर पर सलाह मानती है, लेकिन न मानने पर उसे जवाबदेही देनी पड़ती है। यह व्यवस्था आयोग की गरिमा बनाए रखती है।
- प्रश्न 94: (A) व्याख्या: वित्त आयोग (अनुच्छेद 280), CVC (संथानम समिति), CBI (DSPE एक्ट) और लोकपाल (भ्रष्टाचार विरोधी)
- प्रश्न 95: (D) व्याख्या: 1935 का अधिनियम वर्तमान संविधान का मुख्य ब्लूप्रिंट है। इसने द्वैध शासन को केंद्र में स्थानांतरित कर दिया और प्रांतों को स्वायत्त बनाया।
- प्रश्न 96: (B) व्याख्या: कथन 1 गलत है। संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा किया गया था, प्रत्यक्ष जनता द्वारा नहीं।
- प्रश्न 97: (A) व्याख्या: महाभियोग (USA), संसदीय विशेषाधिकार (UK), संघीय ढांचा (कनाडा) और DPSP (आयरलैंड)।
- प्रश्न 98: (D) व्याख्या: ये चारों विशेषताएं केंद्र को राज्यों की तुलना में अधिक शक्तिशाली बनाती हैं, जो एकात्मक व्यवस्था के लक्षण हैं।
- प्रश्न 99: (A) व्याख्या: 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश संसद ने शासन की बागडोर सीधे अपने हाथ में ले ली।
- प्रश्न 100: (A) व्याख्या: कथन 3 गलत है। 'समाजवादी', 'पंथनिरपेक्ष' और 'अखंडता' शब्दों को 42वें संशोधन (1976) द्वारा जोड़ा गया था, ये मूल संविधान में नहीं थे।